PAPERS LAID ON THE TABLE— *Contd.*

NOTIFICATION RE. REDUCTION IN EXPORT DUTY ON CARDAMOM

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI MAGANBHAI BAROT): I beg to lay on the Table a copy of Notification No. 123/80-Customs (Hindi and English versions) published in Gazette of India dated the 20th June, 1980 together with an explanatory memorandum regarding reduction in export duty on Cardamom, under section 159 of the Customs Act, 1962. [*Placed in Library. See* No. LT—939/80]

MR. CHAIRMAN: Now the hon. Minister of Railway will reply. He may please reply while sitting, because he is not well.

14.06 hrs

RAILWAY BUDGET, 1980-81— GENERAL DISCUSSION—*Contd.*

रेल मंत्री (श्री कमलापति त्रिपाठी): सभापति महोदय, मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि रेलवे बजट प्रस्तुत करने का जो अवसर मुझे मिला, उस पर प्राय: 3 दिनों तक माननीय सदन ने बड़ी गंभीरता के साथ विचार किया। माननीय सदस्यों ने बहुत बड़ी संख्या में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं, मैं उन सब को हार्दिक बधाई देना चाहता हूं और धन्यवाद देना चाहता हूं। अब अपनी ओर से अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूं कि उन्होंने बहुत से सुझाव दिये और मेरा मार्ग-दर्शन किया।

माननीय सदस्यों के भाषणों से मुझे बड़ा प्रकाश मिला है, मुझे बहुत-सी जानकारी मिली है और मुझे बोध हुआ है कि इस विभाग का संचालन करने के लिये मेरे सम्मुख क्या कर्तव्य है और किस प्रकार है। मैं उन कर्तव्यों को पूरा करने की चेष्टा करूंगा, इसीलिये मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूं।

मैं इस अवसर पर इतना और कहना चाहता हूं कि सारी बातों का जवाब देना बजट का उत्तर देते हुए शायद संभव न होगा, क्योंकि इसमें बहुत-सी बातें ऐसी कही गई हैं, जिनके सम्बन्ध में जानकारी हासिल करनी पड़ेगी। नई लाइनों को बढ़ाने की, विभिन्न क्षेत्रों में नये रेलवे लिंक्स पैदा करने की, छोटी लाइनों को बड़ी लाइनों में परिवर्तित करने की, बहुत-से आपरेशनल मामलों में भी और यात्रियों को बहुत-सी सुविधाएं देने के मामले में भी जो सुझाव मेरे सामने आये हैं, उन सब पर मैं बहुत गंभीरता से विचार करूंगा। यह आश्वासन दे सकता हूं सदन को कि सदन ही हमारा स्वामी है और उसकी जो आज्ञा होगी, जो उसके विचार हैं, भावनाएं हैं उनका आदर करना और उन्हें कार्यान्वित करना मेरे लिये परम सन्तोष और परम धर्म की बात है।

जैसा कि परम्परा रही है--और मैंने भी उसका अनुसरण किया है—जो ऐसे सवाल उठाये गये, जिनका तत्काल उत्तर देना सम्भव नहीं हुआ, चाहे वे इनटेरिम बजट के समय उठाये गये अथवा सप्लीमेंटरी बजट के समय उठाये गये, तो उस समय भी मैंने यह आश्वासन दिया था कि मैं उन प्रश्नों का उत्तर स्वंय माननीय सदस्यों के यहां पहुंचा दूंगा। आज मुझे यह कहने में प्रसन्नता होती है कि इनटेरिम बजट और सप्लीमेंटरी बजट से सम्बन्धित ऐसे बहुत से प्रश्नों का उत्तर मैंने पत्रों के द्वारा माननीय सदस्यों के पास भेजा है। उसमें समय अवश्य होगा, क्योंकि बहुत सी जांच-पड़ताल की भी बातें थी, और बहुतों के सम्बन्ध में विभाग के दूरस्थ अंगों से रिपोर्ट मंगाने की आवश्यकता थी। संभव है कि कुछ विलम्ब हुआ हो, लेकिन प्राय: सब बातों का उत्तर यथासंभव शक्ति-भर मैंने माननीय सदस्यों के पास अपने पत्रों के द्वारा भेजने की चेष्टा की थी। मुझे आशा है कि वह उन्हें मिल गया होगा। आज भी यदि ऐसे कोई प्रश्न रह जायें—और ऐसे प्रश्न उठाये गये हैं, जैसे किसी क्षेत्र में न कोई लाइन बनाने का सवाल आदि—, तो उसके बारे में मैं नम्रतापूर्वक यह आश्वासन देना चाहता हूं कि उनका उत्तर मैं अपने पत्रों द्वारा उन माननीय